इकाई 7: सीमान्त और सीमाएँ (FrontiersFrontiers and Boundaries)

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 सीमान्त और सीमाओं की प्रकृति

7.2.1 सीमान्त

7.2.2 सीमायें

7.2.3 सीमान्त और सीमाओं में अन्तर

7.3 सीमाओं का विकास क्रम

7.4 सीमाओं का वर्गीकरण

7.4.1 सीमाओं का रचना सम्बन्धी वर्गीकरण

7.4.2 सीमाओं का आनुवांशिक वर्गीकरण

7.5 सीमाओं के कार्य

7.6 सीमा एवं विश्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

7.10 बोध प्रश्नों के उतर

7.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

7.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेगे कि –

- सीमान्त एवं सीमा किसे कहते है?
- सीमान्त और सीमा में क्या अंतर होता है?
- सीमाओं का विकास किस प्रकार होता है?
- सीमाओं के वर्गीकरण एवं विभिन्न प्रकार की सीमाओं की जानकारी हो सकेगी,
- सीमाओं के क्या कार्य होते हैं तथा
- सीमा सम्बन्धी विवादों के स्वरूप स्पष्ट हो सकेंगें ।

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक भूगोल में सीमान्त एवं सीमाओं का अध्ययन विशिष्ट महत्व का है क्योंकि सीमाओं द्वारा राज्य की परिधि निर्धारित होती है जहाँ उसका सार्वभौमिक अधिकार होता है ओर उसके कानून लागू होते हैं । सीमा ही एक राज्य का दूसरे राज्य

के मध्य नियन्त्रण अथवा सम्पर्क रेखा होती है इसी कारण अनेक विवादों का कारण भी बनती है । दूसरी ओर सीमान्त (Frontier) एक क्षेत्र होता है जो सीमा के अस्तित्व में आने से पूर्व पहल का होता है । अनेक राजनीतिक भूगोलवेत्ताओं ने सीमाओं का अध्ययन एक् विश्लेषण किया है तथा इसके उद्भव विकास प्रकार एवं कार्यो का विस्तार से विवेचन किया है ।

रेटजल (RatzelRatzel) जो 1886 से 1904 तक लिपजिक विश्वविद्यालय मैं भूगोल' के प्रोफेसर थे, उन्होंने सीमान्त और सीमाओं पर सर्वप्रथम विस्तृत विचार रखे । सीमाओं को उन्होंने राज्य रूपी जीव की त्वचा (Skin) बताया जो सुरक्षा प्रदान करती है । लार्ड कर्जन (LordCurzon1907), जो भारत के वायसराय भी रह चुके हैं ने सीमाओं सम्बन्धी विचार रखे तथा सीमाओं को प्राकृतिक तथा कृत्रिम दो भागों में विभक्त किया । सर टी.एच. होल्डिच (Sir TSir T.H .Holdich,1915) ने अपनी पुस्तक 'Political Frontiers and Boundary Marking' में सीमा सम्बन्धी महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये । फासेट (Fawcett,1912) ने सीमान्त प्रदेश के भौगोलिक स्वरूप की व्याख्या की। लेप्राडेली (Lapradelle, 1928) की पुस्तक सीमा क्षेत्र और अन्तर्राष्ट्रीय कानून को व्यक्त करती है । बोग्स (Boggs, 1940) ने अपनी पुस्तक International Boundaries –A Study of Boundary Functions and Problems' मैं सीमाओं के कार्यो एवं समस्याओं की विशद व्याख्या की । इसी प्रकार जोन्स (Jones, 1945) की पुस्तक' 'Boundary Making–A Hand Book forStatesmen' इस दिशा में महत्वपूर्ण है । उपर्युक्त प्रारम्भिक कार्यो के अतिरिक्त सीमाओं के विविध पक्षों का विवेचन प्रेसकॉट (Prescott), पोण्ड्स (Pounds). डी ब्लिज (De Blij), विगर्ट (WeigertWeigert) आदि अनेक भूगोलवेत्ताओं ने किया । स्पष्ट है सीमाओं का राजनीतिक भूगोल में विशिष्ट पहल है, इसके विविध पक्षों का संक्षेप में विवरण यहाँ किया जा रहा है ।

7.2 सीमान्त और सीमाओं की प्रकृति (Nature of Frontiers and Boundaries)

सामान्यतया सीमान्त' और सीमा को समान अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है, यहीं तक कि कुछ भूगोलवेत्ताओं ने भी उनको समानार्थ रूप में प्रयोग किया है । किन्तु ये दोनों समान न होकर भिन्न है तथा प्रत्येक की अपनी प्रकृति एवं निर्धारित परिभाषा है । अत: सीमाओं के अध्ययन से पूर्व यह आवश्यक है कि भूगोल का विद्यार्थी इन दोनों में अन्तर को समझे. इसके पश्चात ही सीमा सम्बन्धी विविध पक्षों को समझा जा सकता है ।

7.2.1 **सीमान्त** (Frontier)

'फ्रन्टियर शब्द की उत्पत्ति इन फ्रन्ट (in front) शब्द से हुई है । 'फ्रन्टियर या सीमान्त शब्द किसी निश्चित रेखा के लिये नहीं अपितु एक क्षेत्र के लिये प्रयुक्त किया जाता है । अत: इसको अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है जैसे अग्र प्रदेश (Foreland), सीमा प्रदेश (Borderland), तटस्थ क्षेत्र (Neutral Zone), मानव रहित क्षेत्र (No man's land), संक्रान्ति प्रदेश (Transitional zone), आदि । वास्तव में सीमान्त का ऐतिहासिक विकास स्पष्ट करता है कि यह न तो कानूनी तथ्य है और न राजनीतिक । यह प्राचीन समय से बसे हुए क्षेत्र के सीमावर्ती प्रदेश के लिये प्रयुक्त किया जाता था । क्रमश: सभ्यता का विकास होता गया एवं वातावरण अनुकूल बनाये जाने लगा जिससे यह रिक्त स्थान दो क्षेत्रों का मिलन स्थल बन गया तथा इसकी राजनीतिक महता का विकास हुआ । किन्तु इस अवस्था में भी सीमान्त आधुनिक सीमाओं से भिन्न था क्योंकि यह राजनीतिक इकाई की अन्तिम सीमा नहीं थी । यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं कि अब सीमान्त समाप्त हो गये हैं अपितु अनेक देशों के विवादास्पद क्षेत्र इसी श्रेणी में आते हैं । यह सत्य है कि आधुनिक राज्य की सीमायें सुनिश्चित हैं अत: सीमान्त क्षेत्र स्वत: ही समाप्त हो गये हैं ।

सीमान्त शब्द का प्रयोग वर्तमान समय में अनेक अर्थों में जैसे सामरिक सीमान्त (strategic frontier), राष्ट्रीय सीमान्त (national frontier), अधिवास सीमान्त (settement frontier) तथा राजनीतिक सीमान्त political frontier) के रूप में हो रहा है । वास्तविकता यह है कि यह कानूनी तथ्य न होकर एक ऐसा तथ्य है जिसका प्रयोग सीमावर्ती क्षेत्र के लिये प्रयुक्त होता है । राजनीतिक सीमान्त में भूगोलवेत्ताओं के अध्ययन का उद्देश्य उनकी प्राकृतिक विशेषताओं, स्थिति, उनका प्रभाव एवं सांस्कृतिक स्वरूप में होता है । लार्ड कर्जन ने सीमान्त के दो प्रकार क्रमश: संयुक्त सीमान्त (frontiers of contact) एवं विभक्तक सीमान्त (frontiers of separation) के रूप में व्यक्त किये हैं । ईस्ट (East) के शब्दों में "State have always sought frontiers which foster separation from rather than assimilation with their neighbours " यद्यपि सीमाओं के उद्भव के साथ ही कानून रूप से सीमान्त समाप्त हो जाता है किन्तु प्रकृति में वह व्याप्त रहता है तथा अपना प्रभाव डालता रहता है ।

7.2.2 **सीमायें** (Boundaries)

बाउन्ड्री' शब्द जिसका शब्दार्थ हिन्दी में सीमा' है कि उत्पति अंग्रेजी के 'बाउन्ड' (Bound) शब्द से हुई है जिसका अर्थ है बांधना अथवा सीमित करना अर्थात् जो एक राजनीतिक इकाई को सीमाबद्ध 'करती है । यह एक आधुनिक तथ्य है जो एक राज्य की सार्वभौमिकता अथवा राज्य के अधिकार क्षेत्र को स्पष्ट करती है । इसके

सम्बन्ध में अनेक भूगोलवेत्ताओं ने विचार व्यक्त कर व्याख्या की है । कुछ प्रमुख विचारकों के मत अग्र प्रकार से हैं–

(i) ए–ई. मूडी के अनुसार, सीमा उस क्षेत्र को निर्धारित करती है जिसमें राज्य का आन्तरिक संगठन विकसित होता है तथा जिसके सहारे राज्य अन्य राज्यों के संगठनों का विकास होता है ।

"A boundary defines the area within the states international organization is developed and along it different state systems of organization is developed.")

(Moodie ,A.E.,Geography Behind Politics,p.81)

(ii) पोण्ड्स के अनुसार, सीमायें राज्य की सार्वभौमिकता को पड़ौसी राज्य से विलग करती है ।

"Boundaries separates the sovereignty of one state from that of its neighbours."

(iii) एन्सेल ने सीमाओं को राजनीतिक समपार रेखाओं के समान माना है (जहाँ, दो दबावों के मध्य संतुलन स्थापित होता है ।

''A boundary is a political isobar which indicates the momentary equilibrium between two pressures".

(J.Ancel : Geographic des frontiers ,quoted by Weigert in Principles of Political Geography,p.136)'

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सीमा एक राज्य', के अधिकार क्षेत्र अर्थात् सार्वभौमिकता को परिधी होती है । यह वह रेखा होती है जो उस क्षेत्र की बाहरी सीमा निर्धारित करती है जिसमें राज्य का शासन होता है ।

7.2.3 सीमान्त और सीमाओं में अन्तर

(Difference between Frontires and Boundaries)

जैसा कि –वर्णित किया गया है सीमान्त और सीमा समान नहीं अपितु इनमें भिन्नता है । जिसे राजनीतिक भूगोलवेत्ताओं ने अपने लेखन में स्पष्ट किया है । ये अन्तर निम्न हैं–

(1) मूडी के अनुसार, 'सीमान्त की क्षेत्रीय और सीमाओं की रेखात्मक प्रकृति होती है' Frontiers are areal , boundaries are linear in charater) । स्पष्ट है कि सीमान्त का एक क्षेत्र होता है विस्तार होता है, जब कि सीमा मात्र एक रेखा होती है ।

(2) सीमान्त को 'प्राकृतिक' (natural।) तथा सीमाओं को कृत्रिम (artificial) माना जाता है क्योंकि सीमान्त में क्षेत्र एवं विस्तार होता है अत: वह धरातल के एक

भाग को सम्मिलित करती है अत: प्राकृतिक है । दूसरी ओर सीमा मानव द्वारा निर्धारित होती है । अत: कृत्रिम होती है फिर चाहे वह पर्वतीय सीमा हो, नदी सीमा हो, अथवा सामुद्रिक । प्रकृति ने उन्हें सीमा नहीं बनाया अपितु मानव ने उन्हें सीमा के रूप में निर्धारित किया है ।

(3) सीमान्त बाह्य प्रवृत (outer oriented) होते हैं तथा सीमायें अन्तर प्रवृत (inneroriented) होती है । सीमान्त प्रदेश बाहरी होने से उनकी मूल प्रवृति अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित होती है । इतिहास में अमेरिका, रूस, चीन आदि के उदाहरण मिलते हैं । जहॉ सीमान्त क्षेत्रों में केन्द्रीय शक्ति से भिन्न विचार विकसित हुए हैं । जबकि सीमायें केन्द्रीय शासन के कानून द्वारा नियन्त्रित होती हैं ।

(4) सीमान्त बाहरी शक्ति (centrifugal force) के रूप में तथा सीमा केन्द्रीय शक्ति (centripetal) के रूप में होती है । सीमान्त का सामरिक महत्व इसलिये भी होता है कि ये शत्रु को दूर रखता है । यद्यपि यह केन्द्रीय शक्ति पर निर्भर करता है । सीमा के निश्चित होने पर केवल बाहरी लोग ही नहीं अपितु राज्य के निवासी तथा प्राकृतिक साधन भी उसमें सीमित हो जाते हैं ।

(5) सीमान्त एक संयुक्त तत्व (integrating factor,) के रूप में तथा सीमा विच्छेदक (separating factor) के रूप में होती है । सीमान्त एक क्षेत्र तथा दूसरे क्षेत्र में आदान–प्रदान होता रहता है अत: आपसी सहयोग रहता है जबकि सीमा राज्य को पूर्ण पृथकता प्रदान करती है जिसमें राज्य के नियमों के विरूद्ध कोई कार्य नहीं होता ।

(6) सीमान्त का क्षेत्रीय विस्तार होने के कारण इसमें प्राकृतिक मानवीय साधन होते हैं तथा कुछ जनसंख्या भी निवास करती है । जबकि सीमा मात्र रेखा होने के कारण न साधन हो सकते है और न जनसंख्या । यह केवल एक दीवार के समान होती है जो दो राज्यों को विलग करती है ।

(7) रेटजेल ने सीमान्त एवं सीमाओं का अन्तर स्पष्ट करते हुए व्यक्त किया कि सीमावर्ती प्रदेश (सीमान्त) वास्तविकता है जबकि सीमा रेखा उसका संक्षिप्त स्वरूप।

बोध प्रश्न – 1

1. भूगोल में सीमा सम्बन्धी विचार सर्वप्रथम किस विद्वान ने दिये?
2. लार्ड कर्जन ने सीमाओं को कौन से भागों में विभक्त किया?
3. सीमान्त क्षेत्र और सीमाऐं रेखायें होती हैं, ये विचार किसने प्रतिपादित किये?
4. तटस्थ क्षेत्र अथवा मानव रहित क्षेत्र किसको कहा जाता है?
5. वर्तमान समय में सीमान्त क्यों समाप्त हो रहे हैं?
6. क्या सभी सीमाऐं कृत्रिम होती है?
7. सीमा राजनीतिक समपार होती है, यह किसने कहा था?

8. सीमान्त एवं सीमाओं में तीन अन्तर बताइये ।

7.3 सीमाओं का विकास क्रम (Evolution of Boundaries)

वर्तमान विश्व में सीमाओं का अति जटिल जाल विस्तृत है यहाँ तक की एन्टार्कटिका के हिम मण्डित क्षेत्र पर भी सीमायें हैं । प्रत्येक देश में सीमाओं का निर्धारण सरलता से नहीं हो जाता अपितु अनेक समझौते, विवाद आदि के पश्चात् इनका निर्धारण होता है । यहाँ तक कि अनेक बार युद्ध भी इनके निर्धारण में हो जाता है । सीमाओं के निर्धारण में भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक आदि अनेक तथ्यों पर ध्यान दिया जाता है । अत: राजनीतिक भूगोल में इनका विकास क्रम महत्व रखता है ।

भूगोलवेत्ताओं ने इस सम्बन्ध में अनेक विचार प्रस्तुत किये है । ब्रिघम (Brigham 1917) ने इनकी तीन अवस्थायें अर्थात् आदिम (tribal), संक्रान्ति (transitional) और आदर्श (ideal) बताई हैं । लेप्रेउली (Lapradelle 1928) ने भी सीमा विकास के तीन स्तर अर्थात योजना preparation), निर्णय (decision) और निर्णय को लागू करना (execution) वर्णित किये हैं । इसी प्रकार प्रो. जोन्स (Jones) ने सीमा विकास की चार दिशायें अर्थात् निश्चय (allocation), निर्धारण (delimitation), अंकन (demarcation) और प्रशासन(administration) व्यक्त किये हैं ।

सामान्यतया सीमा विकास की तीन अवस्थायें मानी जाती हैं –

(1) निश्चय (Allocation)

(2) निर्धारण (Delimitation),

(3) अंकन(Demarcation)

(1) **निश्चय** (Allocation)

सर्वप्रथम सीमान्त प्रदेश में सीमा निश्चित करने हेतु भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तत्वों आदि का ध्यान रखा जाता है । जिन क्षेत्रों के सम्बन्ध में ज्ञान नहीं होता वहीं सीमा! ज्ञात बिन्दुओं को मिलाने वाली सीधी रेखाओं के रूप में या प्राकृतिक तत्वों के आधार पर अंकित कर दी जाती हे । जैसा कि अंगोला तथा दक्षिणी अफ्रीका के मध्य 1886 में पुर्तगीज तथा जर्मन ने की थी । किन्तु अनेक बार ये वर्णित सीमायें वास्तविक धरातल से समता नहीं खातीं फलस्वरूप अनेक समस्याओं का जन्म होता है जैसा कि चिली–अर्जेन्टाइना सीमा या अलास्का–कनाडा की सीमा में हुआ । अत: सीमा निश्चित करने से पूर्व सीमा कमीशन के सदस्यों द्वारा क्षेत्र की पूर्ण जानकारी कर लेना आवश्यक है ।

सीमा विकास की इस प्रथम अवस्था में विवादास्पद वर्णन. अथवा इस प्रकार के आधार जिनमें परिवर्तन होता रहता' है, को सम्मिलित नहीं करना चाहिये अन्यथा ये सीमा विवाद का कारण बन जाते हैं । इस समस्या के समाधान हेतु जोन्स ने सिद्धान्त

रूप में सीमा परिभाषित करने का विचार व्यक्त किया अर्थात् क्षेत्रीय विभाजन और उसके आधार की पूर्ण व्याख्या की जानी चाहिये । प्राकृतिक भू–रूप के आधार पर व्यक्त सीमा कभी–कभी गलत मानचित्र या भू–रूप में परिवर्तन के कारण वास्तविकता से समता नहीं रखती । जैसे 1885 में ब्रिटेन और जर्मनी में नाइजीरिया तथा कमरून के मध्य रायोडेल–रे नदी के दाहिने किनारे को सीमा स्वीकार किया, किन्तु जब वास्तविकता यह थी कि यह नदी इतनी बड़ी नहीं थी, जितनी मानचित्र पर बनाई हुई थी । इसके साथ ही सांस्कृतिक तत्वों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है ।

(2) **निर्धारण** (Delimitation)

सीमा निर्धारण अत्यधिक प्रमुख अवस्था है क्योंकि इसी को लेकर कालान्तर में अनेक विवाद होते है । सीमा निर्धारण के सम्बन्ध में मेकमहोन ने लिखा है कि सीमा रेखा का सन्धि अथवा अन्य प्रकार से निर्धारण तथा लिखित या मौखिक रूप से परिभाषित करना सीमा निर्धारण कहलाता है । इसमें प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण की अत्यधिक महता है ।

अनेक ज्यामितिय सीमायें केवल इसलिये होती है कि उस क्षेत्र की –जानकारी नहीं होती तथा उसकी आर्थिक एवं सामरिक उपयोगिता नगण्य होती है ।

सीमा–निर्धारण की प्रक्रिया के दो स्वरूप होते हैं । प्रथम जिसमें सीमा की पूर्ण व्याख्या होती है तथा सर्वेक्षणकर्ता उसी के अनुरूप कार्य करता हैं । द्वितीय में सर्वेक्षणकर्ता क्षेत्रीय परिस्थितियों के कारण कुछ सामंजस्य करने में स्वतंत्र होता है । सीमा–निर्धारण में तीन विधियाँ अपनायी जाती है । प्रथम में सही रूप में अंश तथा दूरी के आधार पर व्याख्या के अनुरूप निर्धारण किया जाता है । प्रमुख घुमाव बिन्दुओं जिनसे होकर सीमा गुजरती है का वर्णन होता है । तृतीय विधि में सीमा किसी रेखात्मक दृश्य जैसे सड़क, नदी, पर्वत, शिखर आदि के आधार पर होती है । यदि सीमा का निर्धारण समुचित रूप में हो. जाता है तो सीमा विवाद नहीं होते ।

(3) **अंकन** (Demarcation)

अंकन से तात्पर्य है वर्णित सीमा का वास्तविक रूप में अंकन करना जिसको देखा जा सके जैसे स्तम्भ लगाकर या काँटेदार तार लगाकर या अन्य साधन द्वारा । अंकन की दो प्रमुख समस्यों वर्णित सीमा की सही व्याख्या तथा अनभिज्ञ वातावरण में सर्वेक्षण है । क्योंकि सीमा के पश्चात उसका अनिश्चित वर्णन, अनेक जगह के –नामों के. सम्बन्ध में भ्रान्तियाँ, अस्तित्वहीन वस्तुओं का वर्णन या समय के साथ परिवर्तन के कारण अनेक समस्याओं का जन्म होता है । इसका एक कारण यह भी है कि सीमा–निर्धारण के तुरन्त बाद ही जब अंकन नहीं होता तब बाद में अनेक समस्याओं का जन्म हो जाता है । आज. भी विश्व में अनेक सीमायें. अंकित नहीं हैं । सीमांकन हेतु सीमा स्तम्भों (Boundary Pillers) का उपयोग सर्वाधिक किया जाता है ।

7.4 सीमाओं का वर्गीकरण (Classification of Boundaries)

राजनीतिक भूगोल में सीमाओं का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है, प्रथम–रचना सम्बन्धी वर्गीकरण एवं द्वितीय–आनुवांशिक या उत्पति सम्बन्धी वर्गीकरण । इनका संक्षेप में विवेचन सीमाओं के स्वरूप को समझने के लिये आवश्यक है ।

7.4.1 सीमाओं का रचना सम्बन्धी वर्गीकरण

(morphological Classification of boundaries);

सीमाओं के निर्धारण में विश्व में कहीं प्राकृतिक तो कहीं स्वरूप को आधार माना जाता है तथा कभी–कभी मात्र रेखात्मक अंकन को आधार जाता है । इसी को आधार मानकर रचना के आधार पर सीमाओं को तीन भागों में वर्गीकृत जाता है, वे हैं–

(1) भू–आकारिक सीमा, ।

(2) प्रजातीय–भौगोलिक सीमा,

(3) ज्यामितीय या रेखात्मक सीमा ।

(1) भू–आकारिक सीमा (Physiographic Boundaries) जब सीमा–निर्धारण का अधार किसी धरातलीय आकृति जैसे– पर्वत, नदी, झील, आदि से सम्बन्धित है तो उसे भू–आकारिक सीमा की संज्ञा दी जाती है । इसके अन्तर्गत प्रमुखत: पर्वतीय, पठारी नदी, झील आदि द्वारा निर्धारित सीमायें महत्वपूर्ण होती हैं । सागरीय सीमा का विस्तार समुद्र से सागर की ओर होता है जिनका विवेचन क्षेत्रीय सागर परिकल्पना के अन्तर्गत होते हैं किन्तु ये दृश्यावली अनिर्धारित एवं विस्तारित होती हैं । पर्वतीय, नदी एवं झील द्वारा निर्धारित सीमाओं का !,संक्षिप्त विवेचन अपेक्षित है–

(i) **पर्वतीय सीमा** - भू–आकारिक सीमा में प्रथम प्रकार की ' पर्वतीय सीमा (– mountain) होती है । इनका निर्धारण पर्वत श्रेणी के सहारे–सहारे 'होता है । पर्वतीय सीमा के सम्बन्ध में सर थॉमस होल्डिच ने लिखा है कि सभी प्राकृतिक तत्वों में एक निश्चित जल विभाजक रेखा जो एक विशिष्ट पर्वत श्रेणी द्वारा निर्धारित होती है, निसन्देह सबसे अधिक स्थाई, सही तथा अवरोधक के रूप में है । पर्वत श्रेणियाँ सामरिक एवं सैनिक दृष्टिकोण से उत्तम सीमा होती हैं । किन्तु पर्वतीय सीमा–निर्धारण में भी अनेक कठिनाइयाँ होती हैं, क्योंकि पर्वत श्रेणियों बनावट में जटिल होती है, उनकी ऊँचाई, लम्बाई, चौड़ाई तथा अनेक श्रेणियों का समानान्तर विस्तार अनेक सीमा विवादों को जन्म देती है, जैसा कि चिली–अर्जेन्टाइना की सीमा पर हुआ । यह सीमा–विवाद अर्द्ध–शताब्दी तक इसी कारण होता रहा कि वर्णित सीमा धरातल से मेल नहीं खाती थी, क्योंकि एण्डीज पर्वत श्रेणियों में स्पष्ट जल विभाजक नहीं है चीन तथा भारत में सीमा विवाद भी इसी प्रकार का है अर्थात् 1914 में मेकमहोन रेखा सीमा

स्वीकार की गई किन्तु अंकन नहीं किया गया । अत: बाद में दोनों देशों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से उसको स्पष्ट किया । यह कठिनाई होते हुए भी पर्वतों को सीमा के रूप में प्राचीन काल से उपयोग में लाया जा रहा है और आज भी अनेक सीमायें इनके आधार पर हैं । फ्रांस–स्पेन के मध्य पीरेनीज की श्रेणियाँ इसका सर्वोतम उदाहरण हैं जो दो संस्कृतियों को भी विभक्त करती हैं ।

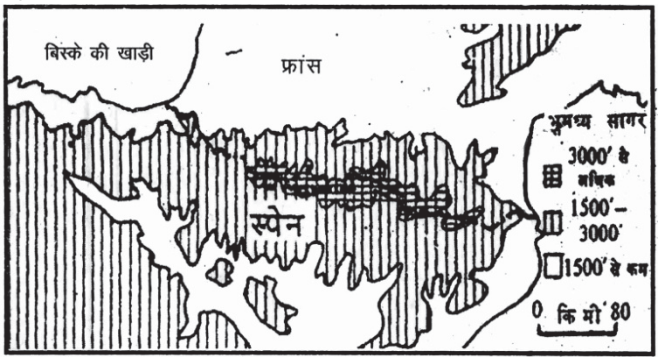

स्पेन-फ्रांस के मध्य पिरेनीज़ सीमा के रूप मे (पर्वतीय सीमा)

(ii) **नदी सीमा** – पर्वतों के समान नदियों का उपयोग भी सीमांकन के लिए प्राचीन काल से किया जाता रहा है, क्योंकि नदियाँ मानचित्र पर स्पष्ट अंकित होती हैं तथा नदियों की चौड़ाई भी सीमित होती है । साथ ही यह धरातल पर भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है । विश्व में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय नदी सीमायें हैं जैसे संयुक्त राज्य मेक्सिको के मध्य दृष्टिगोचर जेम्बजी–रोडेशिया के मध्य जेम्बजी नदी आदि । इसके अतिरिक्त मीकांग, सालवन, कांगो, वोल्टा, पेरागुए, ओरेनिको आदि नदियाँ भी अनेक स्थानों पर सीमा रूप में उपयोग में ली गई हैं । नदी सीमाओं में सबसे प्रमुख समस्या अंकन की है । क्योंकि नदी की चौड़ाई होती है अत: नदी सीमा की संभावना क्रमश: एक तट के सहारे, परिवहन योग्य नदी का मध्य भाग या मध्यवर्ती रेखा (median line) है । यद्यपि प्रत्येक अवस्था में कठिनाइयाँ हैं । एक तट के सहारे सीमा व्यावहारिक नहीं क्योंकि इससे जल उपयोग एक ओर सीमित हो जाता है तथा नदियों का जल कम तथा अधिक होता रहता है । परिवहन योग्य नदी का मध्य भाग भी परिवर्तित होता रहता है । उसको निश्चित करना कठिन है क्योंकि सबसे गहरा भाग ही परिवहन योग्य होता है उसके लिये यह आवश्यक नहीं कि मध्य में ही हो । मध्यवर्ती रेखा –दोनों किनारों से 'समान दूरी पर स्थित होती है । यदि इसे अवस्था में नदी में जल परिवहन होगा –तो अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन होगा । इसके लिये नदी के दोनों किनारे निश्चित होना आवश्यक है जिसमें परिवर्तन होता रहता है । वास्तव में नदी सीमायें दोनों देशों के आवसी सहयोग से ही सफल होती हैं ।

(iii) **झील सीमा** – झीलों से भी सीमा निर्धारित की गई है । सामान्यतया इसमें मध्य रेखा को स्वीकार किया है जैसी कि संयुक्त राज्य–कनाडा की सीमा सुपीरियर, हुरन, श्री और ओन्टेरियों झीलों से गुजरती हैं । पूर्वी अफ्रीका में समझौतों द्वारा झीलों में सीमा निश्चित की गई है विक्टोरिया। झील का. विभाजन यूगाण्डा, किनिया और

टांगानिका में असमान है जो मध्य रेखा पर अधारित नहीं है । स्विट्जरलैण्ड की सीमा जनेवा, लैंगो–मैंगीओर लैंगो–डी–लुगानो कान्सटैन्स झीलें अन्य देशों के साथ सीमा बनाती है । इसमें झील कान्सटैन्स तीन देशों की सीमा अर्थात् स्विट्जरलैण्ड, आस्ट्रिया तथा जर्मनी के मध्य सीमा हैं ।

(2) **प्रजातीय–भौगोलिक सीमायें** (Anthropo–geographic boundaries) –

प्रजातीय सीमा से तात्पर्य है जिसका निर्धारण जाति, भाषा अथवा धर्म के आधार पर हो अथवा जो सांस्कृतिक वातावरण को विभक्त करती है । धर्म के आधार पर सीमा निर्धारण भारत–पाकिस्तान या अरब–इजराइल की सीमा से स्पष्ट होता है । राज्यों की आन्तरिक सीमायें भी इनसे. प्रभावित होती है जैसे भारत में राज्यों की सीमा भाषा के आधार पर निश्चित की गई है । इसी प्रकार कांगो ने अपने 20 प्रान्तों की सीमा आदिवासी जातियों की पृथकता के आधार पर अंकित की है । संयुक्त राज्य अमेरिका एवं मेक्सिकों की सीमा निर्धारण भी इसी आधार पर है ।

झीलों के मध्य से संयुक्त राज्य–कनाडा सीमा

(3) ज्यामितीय सीमायें (Geometric boundaries) –

विश्व में अनेक सीमाओं का आधार मात्र रेखायें हैं । ज्यामितिय सीमा के चार स्वरूप देखे जाते हैं–

(1) देशान्तर के सहारे उत्तर–दक्षिण में विस्तृत,

(2) अक्षांश के सहारे पूर्व–पश्चिम में विस्तृत,

(3) दो बिन्दुओं के मध्य निम्नतम दूरी को मिलाने वाली रेखा,

(4) नदी अथवा समुद्र तट के समान दूरी पर अंकित सीमायें ।

विश्व में ज्यामितीय सीमायें अनेक है । देशान्तर के सहारे अंकित सीमा का सबसे अच्छा उदाहरण अलास्का–कनाडा सीमा हे जो 141' पश्चिमी देशान्तर के सहारे विस्तृत है । अक्षांशीय सीमाओं में संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के मध्य की सीमा अधिकांशत 49० उत्तरी अक्षांश के सहारे है । इसी प्रकार मेक्सिको–संयुक्त राज्य की सीमा तृतीय प्रकार का उदाहरण प्रस्तुत करती है । गेम्बिया की सीमा गेम्बिया नदो से 10 किमी. की दूरी पर स्थित है । अफ्रीका में इस प्रकार की सीमायें सबसे अधिक है । इसका कारण क्षेत्रीय ज्ञान की कमी और सीमा निर्धारण की शीघ्रता भी रहा है । संयुक्त राज्य अमेरिका में राज्यों की अधिकांश सीमायें रेखात्मक हैं ।

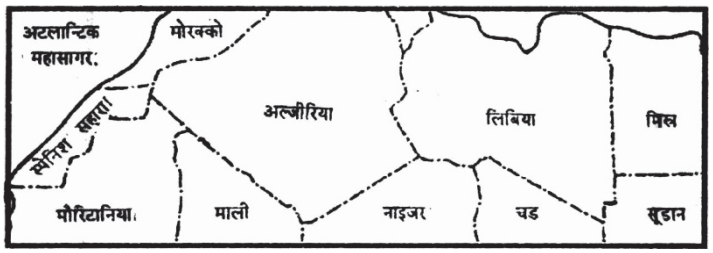

उत्तरी अफ्रीका में ज्यामितीय सीमायें

7.4.2 **आनुवांशिक वर्गीकरण** (Genetic Classification) –

इसके अन्तर्गत सीमाओं का विभाजन उनकी उत्पति के समय के सांस्कृतिक वातावरण के आधार पर किया गया है । इस प्रकार का विचर सर्वप्रथम हार्टशोर्न ने अपने एक पत्र 'Suggestions on the Terminology of Political Boundaries' में प्रस्तुत किया । –इसका मुख्य आधार यह है कि सीमायें सांस्कृतिक वातावरण के विकास से पहले, मध्यान्तर में अथवा, बाद में स्थापित की गई हैं । इस विभाजन का नामकरण भौतिक भूगोल के नदी प्रणाली के विकास के आधार पर किया गया है । इस आधार पर सीमाओं के निम्न प्रकार हैं –

(1) पूर्ववर्ती सीमा (Antecdent Boundary

(2) परवर्ती सीमा (Subsequent Boundary)

(3) अध्यारोपित सीमा (Super–imposed Boundary) ।

(4) अवशेष सीमा (Relict Boundary)

(1) **पूर्ववर्ती सीमा** (Antecdent Boundary) – पूर्ववर्ती सीमा से तात्पर्य है जिसका विकास सांस्कृतिक वातावरण के विकास से पहले हुआ हो. जैसे मरूस्थल में जब सीमा अंकित की गई हो उस समय केवल चरवाहे घूमते हों, किन्तु पेट्रोलियम की खोज अथवा सिंचाई के विकास से सांस्कृतिक वातावरण विकसित हो जाता है । संयुक्त राज्य कनाडा की सीमा उस समय निर्धारित की गई थी जब झीलों के पश्चिमवर्ती क्षेत्रों में कुछ शिकारी इण्डियन्स घूमते थे, जबकि आज शहर, परिवहन, कृषि का विकास हो गया है और लगभग सभी भागों में जनसंख्या का विस्तार हो गया है । कुछ इसको प्राथमिक सीमा (Pioneer Boundary) की संज्ञा देते हैं, किन्तु_ हार्टशोर्न ने इसमें भिन्नता वर्णित की है अर्थात प्राथमिक सीमा केवल उस समय होती है जबकि क्षेत्र पूर्णतया अविकसित होता है, जबकि पूर्ववर्ती सीमा में कुछ बसाव प्रारम्भ से ही रहता है।

(2) **परवर्ती सीमा** (Subsequent Boundary) – यह सीमा सांस्कृतिक वातावरण के विकास के पश्चात् अस्तित्व में आती है और साधारणतया मुख्य या गौण प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक प्रदेशों से गुजरती है । ये अनेक बार भाषा, धर्म अथवा अन्य प्रजातीय आधार पर विकसित होती है । इस प्रकार की अनेक सीमायें यूरोप में हैं जो भाषायी पृथकता को स्पष्ट करती है । भारत–पाकिस्तान की सीमा इसी प्रकार की है ।

परवर्ती सीमा अनेक बार सांस्कृतिक गतिरोध उत्पन्न करती है जैसे स्विट्जरलैण्ड की सीमा जर्मन बोलने वालों को जर्मन से तथा फ्रेन्च से पृथक करती है ।

(3) **अध्यारोपित सीमा** (Super–imposed Boundary) – इनका विकास भी परवर्ती सीमा के समान सांस्कृतिक वातावरण के पश्चात् होता है, किन्तु परवर्ती सीमाओं से भिन्न ये सांस्कृतिक वातावरण से बिल्कुल समता नहीं रखती, अपितु उस पर आरोपित होती हैं, जो एक ही जाति, धर्म अथवा भाषा के लोगों को विभक्त करती हैं । उपनिवेशिक शक्तियों में एशिया. अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका में इस प्रकार की सीमाओं का विकास हुआ । विशेषकर, घाना, टोगा नाइजीरिया, अंगोला, दक्षिणी–पश्चिमी अफ्रीका की सीमायें इसी प्रकार की हैं । अध्यारोपित सीमा में युद्ध–विश्राम रेखा (Truce line) भी सम्मिलित की जाती है, जैसे उतरी–दक्षिणी कोरिया या उतरी–दक्षिणी वियतनाम की सीमा ।

(4) **अवशेष सीमा** (Relict Boundary) – अवशेष सीमा से तात्पर्य है जिस सीमा की समाप्ति हो गई हो, किन्तु वहाँ के सांस्कृतिक वातावरण में यह विद्यमान रहती है । इसके लिये हार्टशोर्न ने रूस–जर्मन सीमा का उदाहरण दिया है जिसको अपर साइलेशिया के औद्योगिक प्रदेश में वहाँ के आवासों की बनावट में भिन्नता के रूप में देखा जा सकता है । यद्यपि इस प्रकार की सीमाओं को विशेष महत्व नहीं होता यहाँ तक कि समय के साथ उनको पहचानना भी कठिन हो जाता है

7.5 सीमाओं के कार्य (Boundary Function)

सीमा राज्य का एक अति महत्वपूर्ण तत्व है जो राज्य की परिधि निर्धारित करती है, जहाँ राज्य का कानून लागू होता है तथा अन्य राज्यों से उसके सम्बन्ध निर्धारित होते है । सीमायें मात्र मानचित्र पर अंकित रेखायें नहीं अपितु ये अनेक कार्य सम्पादित करती है । बोग्ज (Boggs) ने सीमाओं के कार्यो के सम्बन्ध में लिखा है कि ये समय के साथ परिवर्तित होते रहते हैं । प्राचीन काल में जो सीमाओं के कार्य थे वे मध्य युग में नहीं रहे और मध्ययुगीन कार्य आधुनिक युग में नहीं है । सीमाओं द्वारा मुख्यरूप से निम्न कार्य सम्पादित किये जाते हैं–

(1) सुरक्षात्मक – सीमा का स्वरूप एक सुरक्षा रेखा (a line of defence) के रूप में होता है । प्राचीन काल से ही सीमा सुरक्षा का प्रयत्न किया जाता रहा है । सीमा राज्य की परिधि होती है अत: यदि सीमा सुरक्षात्मक कार्य नहीं कर पाती तो राज्य का अस्तित्व संकट में पड़ जाता है । सीमाओं की किलेबन्दी करना प्राचीन परम्परा है और आज भी सीमाओं पर देश की रक्षा निर्भर करती है । अत: प्रत्येक देश इनको सैनिक दृष्टिकोण से सुरक्षित करना चाहता है । सीमा सुरक्षा उस समय और अधिक आवश्यक हो जाती है जबकि पड़ोसी देश से सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण हों । यद्यपि वर्तमान काल में युद्ध की तकनीकी का इतना अधिक विकास हो गया है कि सीमा ही

नहीं अपितु आन्तरिक स्थल भी सरलता से भेद्य हो गये हैं, किन्तु इसके साथ ही सुरक्षात्मक तकनीक का भी विकास हुआ है । आज यद्यपि पर्वतीय या दीवार की सीमा का महत्व नहीं है, किन्तु प्रत्येक देश अपने स्तर के अनुसार सुरक्षा के उपाय करते हैं तथा सीमायें आज भी सुरक्षात्मक कार्य सम्पन्न करती हैं ।

(2) **अवरोध कार्य** (Barrier Function) – सीमा अवरोधक के रूप में सदैव से रही हैं और आज भी हैं । सीमाओं को कितना अधिक अवरोधक बनाया जाय, यह प्रत्येक देश की नीति पर निर्भर करता है! सीमा अवरोधक का चरम स्वरूप लौह आवरण (Iron curtain) के रूप में मिलता है जो पूर्व सोवियत संघ ने स्थापित किया। जिसमें मानव या वस्तुयें ही नहीं अपितु मानव विचार भी अप्रवेश्य होते हैं । दूसरी ओर अनेक देश जैसे संयुक्त राज्य–कनाडा, आदि में सामान्य रूप से आदान–प्रदान होता रहता है । किन्तु यह सत्य है कि प्रत्येक देश की सीमा एक् अवरोधक है यद्यपि इसकी मात्रा में भिन्नता हो सकती है । सीमा के अवरोधक कार्य के ही कारण राज्य का अन्य राज्यों से भिन्न एक विशिष्ट स्वरूप विकसित होता है ।

(3) **राज्य व्यवस्था के अभिन्न अंग के रूप में** – सीमा राज्य का एक प्रमुख अंग होने के कारण राज्य के अनेक संगठनों को प्रभावित करती है । सर्वप्रथम सीमा का व्यापारिक कार्य है । सीमा पार से होने वाले व्यापार के नियम होते हैं । प्रत्येक राज्य के सीमा सम्बन्धी नियम होते है । इससे बाहर से सामान पर रोक लगाई जा सकती है जिससे कि आन्तरिक उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है । इस प्रकार नियन्त्रित व्यापार पर भी सीमा पर ही रोक लगाई जाती है अन्यथा इससे देश की आर्थिक व्यवस्था में बाधा उत्पन्न –हो जाती है । इसके अतिरिक्त सीमा राज्यों के मध्य भिन्नता की घोतक है ।

(4) **कानूनी कार्य** – सीमाओं के कानूनी कार्य Legal function) भी होते हैं । यह वह परिधि है जहाँ तक कि राज्य के कानून लागू रहते हैं । इस परिधि में रहने वालों को समान टैक्स आदि देने होते हैं चाहे उनकी भाषा, धर्म, जाति आदि की भिन्नता हो । इसके अतिरिक्त राज्य आवास एवं प्रवास भी सीमा पर स्थित अनेक स्थानों पर माध्यम से रोक लगाता है ।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर सीमाओं के कार्यो को दो समुदायों मे विभक्त किया जा सकता है : प्रथम– वे कार्य जो सभी राज्यों की सीमाओं में होते है जैसे (1) सभी राज्यों की सीमा राज्य सार्वभौमिकता की परिधि करती है जहाँ उसके नियम लागू होते हैं, (ii) सभी राज्य की आर्थिक नीतियाँ होती हैं और सीमाओं की आर्थिक महता होती है । द्वितीय– वे कार्य जो प्रत्येक राज्य को सीमाओं से भिन्न होते हैं जैसे कुछ सीमायें अपेक्षाकृत अधिक अवरोधक होती हैं कुछ कम ।

इसी प्रकार प्रो. बोग्ज (Bogges) ने भी सीमाओं के कार्यो को दो समुदायों में विभक्त किया है : प्रथम – मनुष्यों के संदर्भ में in respect persons) एवं द्वितीय– वस्तुओं के संदर्भ में (in respect of things) एक अन्य विभाजन के अनुसार इनके

कार्यो को सैनिक (military) और असैनिक (non–military) रुप में व्यक्त किया गया है ।

बोध प्रश्न – 2

1. सीमा विकास की कौन–कौनसी अवस्थायें है?
2. सीमा निर्धारण की अन्तिम अवस्था का क्या नाम हैं?
3. भू–आकारिक सीमा कौनसी होती है?
4. झील सीमा का प्रमुख उदाहरण कौनसा हे?
5. अरब–इजराइल सीमा किस प्रकार की है?
6. संयुक्त राज्य अमेरिका–कनाडा के मध्य सीमा कौनसा अक्षांश बनाता 'है?
7. अध्यारोपित सीमा किस वर्गीकरण में सम्मिलित है?
8. सर्वाधिक ज्यॉमितीय सीमायें किस महाद्वीप में है?
9. लौह आवरण से क्या तात्पर्य है?
10. क्या सीमा मात्र अवरोध होती है?

7.6 सीमा एवं विश्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (Boundary and World International Relations)

वर्तमान विश्व मानचित्र पर राजनीतिक सीमाओं का अति सघन जाल विस्तृत है । सीमा हो यह स्थल है जहाँ एक राज्य का अन्य राज्यों से सम्बन्ध होता है । अत: इनको लेकर अनेक विवाद उपस्थित हो जाते हैं । ये विवाद कभी–कभी सीमित प्रभावशाली होते हैं तथा कभी अति विस्तृत रूप ले लेते हैं । इनके सम्बन्ध में लार्ड कर्जन ने लिखा है 'सीमायें वास्तव में रेजर की धार के समान हैं जिन पर वर्तमान युद्ध या शांति अथवा राष्ट्रों के जीवन और मृत्यु का प्रश्न लटका रहता है ।" इसी प्रकार का विचार ब्रिटिश सीमा आयोग के एक सदस्य सर थोमस एच. होल्डिव ने व्यक्त किये हैं अर्थात् 'विश्व के वर्तमान इतिहास में अधिकांश युद्ध या अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े जिनका परिणाम युद्ध हो सकता है, सीमा विवादों के कारण ही उत्पन्न हुए हैं ।"

अत: स्पष्ट है कि सीमाओं का वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप महत्वपूर्ण है । इनका यह स्वरूप सीमा–विवादों के रूप में सम्मुख आता है । विगत सीमा विवादों से उनके चार स्वरूप स्पष्ट होते है—

(1) क्षेत्रीय विवाद (Territorial disputes)

(2) स्थिति सम्बन्धी विवाद (Positional disputes),

(3) सीमा कार्य सम्बन्धी विवाद (Functional disputes),

(4) साधन विकास सम्बन्धी विवाद (Disputes over resource development)

1. **क्षेत्रीय विवाद** – ये विवाद सीमा के निकटवर्ती क्षेत्र के लिये होते हैं । एक राज्य दूसरे राज्य के क्षेत्र पर अपना अधिकार व्यक्त करता है जिसका वास्तविक आधार नहीं होता ।

यह अधिकांशत: उस समय होता है जब सीमायें सांस्कृतिक एवं आर्थिक तथ्यों से समता नहीं रखती हैं तथा विदेशी शक्तियों द्वारा आरोपित होती हैं । चीन का लद्दाख एवं नेफा के क्षेत्र में क्षेत्रीय विवाद मात्र अपनी शक्ति प्रदर्शित करने का ढंग था । अनेक बार सीमा क्षेत्र में खनिजों की प्राप्ति भी इसका कारण बन जाती है जैसे पीरू–चिली–बोलिविया के सीमा क्षेत्रों में नाइट्रेट की उपलब्धि वहाँ की सीमा–विवाद का करण थी । इसी प्रकार युद्ध के पश्चात क्षेत्रीय सीमा विवाद अधिक हो जाते सीमा क्षेत्रीय विवादों का एक मूल कारण यह होता है कि कब एक राज्य अधिक शक्तिशाली हो जाता है तो वह कमजोर पड़ोसी राज्य के सीमा पार के कुछ क्षेत्र को चाहने लगता है । इसके लिये अनेक तर्क दिये जाते हैं, वे तर्क कितने सही हों यह ध्यान नहीं दिया जाता । इन विवादों के लिये तीन कारण उत्तरदायी होते हैं । प्रथम – सीमा बिना क्षेत्रीय धरातल एवं सांस्कृतिक ज्ञान के निर्धारित कर ली जाती है जैसा कि अफ्रीका, एशिया एवं दक्षिणी अमेरिका के देशों में हुआ है जहाँ, उपनिवेशिक शक्तियों ने सीमायें आरोपित कर दी । द्वितीय – युद्ध समाप्त होने पर जीता हुआ देश हारे देश पर सीमा आरोपित कर देता है जो वास्तविक प्रारूप अनुरूप नहीं होती ।

2. **स्थिति सम्बन्धी विवाद** – सीमा की वास्तविक स्थिति के स्पष्टीकरण को लेकर ये विवाद . होते हैं, जैसे अर्जेन्टाइना–चिली, भारत–चीन सीमा विवाद आदि । इसका कारण वर्णित सीमाओं का वास्तविक धरातल से समता न रखना होता है । कभी–कभी सीमांकन में गलती रह जाने के कारण इन विवादों का जन्म बहुत बाद में होता है । इस प्रकार का एक चर्चित सीमा विवाद नाइनीरिया और केमरुन के मध्य था जिसका उद्भव 1888 का एग्लो–जर्मन समझौता था । चीन तथा सोवियत संघ के मध्य अमूर और उसकी नदियों के संगम पर सीमा की स्थिति को लेकर प्रारम्भ हुआ । 1860 की 'संधी सीमा को अमूर नदी के सहारे इसके उतरी नदी से मिलने तक तथा उसरी के सहारे दक्षिण के । वास्तव में इनके मिलन स्थल पर एक त्रिकोण द्वीप है । इस द्वीप की स्थिति दोनों में विवाद का कारण है । भारत–पाकिस्तान की कच्छ से मिलने वाली सीमा यद्यपि निर्धारित है यद्यपि सीमा की वास्तविक स्थिति के सम्बन्ध में दोनों पक्षों के विचारों में भिन्नता होने से विवाद का कारण बन गई 'हैं । नदी के प्रवाह परिवर्तन से भी स्थिति सम्बन्धी सीमा विवाद प्रारम्भ हो जाते हैं । संयुक्त–राज्य– मेक्सीको सीमा विवाद इसी कारण हुआ । लाओस और ' थाईलैंड के मध्य मीकांग नदी से सम्बन्धित विवाद को 1926 के समझौते द्वारा सुलझाया गया । स्थिति सम्बन्धी सीमा विवादों में सामान्यतया अतिसीमित क्षेत्र ही प्रभावित होता है ।

(3) **सीमा कार्य सम्बन्धी विवाद** – सीमाओं के कार्यो को लेकर बहुत कम सीमा विवाद देखने को मिलते है । ये मुख्यतया उन क्षेत्रों मे जहाँ सीमा आदिवासी क्षेत्रों जैसे, सोमाली. आदि से गुजरती है या जहाँ चरवाहों का नियमित स्थानान्तरण होता है जैसे, अफगानिस्तान आदि में । इसी प्रकार इटली और फ्रांस के मध्य1947 की सीमा द्वारा चरागाहों का आपसी उपयोग करने का समझौता किया । इसी प्रकार का विवाद इरान–ईराक के मध्य संघर्ष का कारण रहा शट–एल–अरब (Shatt–el Arab) को लेकर सीमा विवाद आज तक नहीं सुलझ

सका है । सीमा को दूसरे देश के लिये बन्द कर देना भी इसी प्रकार के विवादों में आता है विशेषकर स्थल–आवृत देशों के लिये । 1964 से 1977 के मध्य अफ्रीकी देशों के मध्य 24 बार सीमा बन्द की गई । क्योंकि आपसी विवाद होते हैं इससे स्थल–आवृत देशों को कठिनाई हो जाती है ।

(4) **साधन विकास सम्बन्धी विवाद** – इस प्रकार के अधिकांश विवाद जल विवाद होते हैं या कभी–कभी खनिज भी इनका कारण बन जाते हैं । अनेक बार सीमायें नदियों द्वारा निर्धारित होती है । उनके जल उपयोग करने या झीलों के जल उपयोग या मछली पकड़ने के कारण भी ये विवाद' हो जाते हैं । नदियों के जल उपयोग को लेकर विवादों का जन्म होता है । विशेषकर वर्तमान समय में जब प्रत्येक देश जल विद्यूत एवं सिचाई हेतु नदी जल का उपयोग चाहता है । इसके लिये विद्वानों ने Boundary Water oa Tributaries of Boundaries Waters' शब्दों का प्रयोग किया है । इस प्रकार के विवादों को सामान्य समझौतों के माध्यम से सुलझाया जा सकता है । भारत–बंगला देश के मध्य फरक्का जल विवाद भी इसका एक उदाहरण है ।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि राज्य क्षेत्र की अखण्डता का, राज्य–सीमाओं की अतिक्रमणता और अलंघ्यता के सिद्धान्त से जुड़ा हुआ है, जो आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय कानून में सबसे महत्वपूर्ण है । सीमा सम्बन्धी विवाद एवं दावे राज्यों की उत्पत्ति के समय से ही चले आ रहे हैं और आज भी विश्व के अनेक देश इससे ग्रसित हैं । राज्य क्षेत्र पर स्वामित्व बदलने के पाँच प्रकार हैं – अध्यासन (कब्जा), समर्पण, अभिग्राही (दीर्घ काल तक किसी भू–भाग पर वास्तविक या अनवरत स्वामित्व), अभिवृद्धि और विजय । इसमें अन्तिम प्रकार को वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय कानून में अवैध घोषित कर दिया है । सीमा सम्बन्धी प्रादेशिक विवादों को सामान्यतया आपसी समझ या समन्वय से सुलझाया जा सकता है । इन विवादों के समाधान के लिये जिन तरीकों का उपयोग किया जाता है, वे हैं – वार्ताएँ (सबसे प्रचलित), सत्प्रायस मध्यस्थता (देशों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों अथवा राजनीतिज्ञ की), जाँच तथा समझौता आयोग, अन्तर्राष्ट्रीय विवेचन एवं अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय ।

स्पष्ट है कि सीमा एक ओर राज्य की सार्वभौमिकता निर्धारित करती है, दूसरी ओर अनेक विवादों का कारण होती है । आज सीमायें केवल धरातल तक ही सीमित नहीं अपितु वायु–मण्डल में भी हैं । ऊपरी आकाश का उपयोग भी आज स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता । राजनीतिक जटिलता के कारण सीमाओं का महत्व और होता जा रहा है । वास्तव में सीमाओं की सफलता का मापदण्ड वर्तमान समय में यह है कि कहाँ तक वे देश की सुरक्षा में सहायक हो सकती हैं । किन्तु यदि यही क्रम रहा तो सीमा सुरक्षा स्थिर नहीं रह सकती । अत: वर्तमान परिस्थितियों में प्रमुख आवश्यकता है सीमाओं की प्रकृति में परिवर्तन किया जाये । जैसा कि कहा गया है Change Boundary function then to change boundary themselves " केवल सीमाओं से परिवर्तन करने से वास्तविक उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा । अत: उनके कार्यो में परिवर्तन अपेक्षित है । उनको अधिक मानवीय बनाया

जाय। जिससे आपसी सहयोग एवं सामन्जस्य विकसित हो सके तथा विश्व–शान्ति का मार्ग प्रशस्त हो सके ।

7.7 सारांश (Summary)

सीमाओं का अध्ययन राजनीतिक भूगोल में प्रमुखता से किया जाता है । अनेक भूगोलवेत्ताओं जैसे रेटजल, फॉसेट, बोग्स, जोन्स, प्रेसकॉट, पोण्ड्स, डी. ब्लिज, विगर्ट मूडी आदि ने सीमान्त एवं सीमाओं के विविध पक्षों का विस्तृत विवेचन किया है । प्रस्तुत इकाई में सर्वप्रथम सीमान्त और सीमाओं की प्रकृति स्पष्ट करते हुए उनके अंतर को स्पष्ट किया गया है । वास्तव में सीमान्त और सीमा एक न होकर भिन्न हैं । सीमाऐं एकाएक उद्भूत नहीं होती अपितु इनका क्रमबद्ध रूप में विकास होता है । सीमा विकास की तीन अवस्थायें क्रमश: निश्चय, एवं अंकन है ।

राजनीतिक भूगोल में सीमाओं का वर्गीकरण दो आधार पर किया है, प्रथम रचना सम्बन्धी एवं द्वितीय आनुवांशिक । रचना के आधार पर सीमाओं के तीन प्रकार हैं – भू–आकारिक सीमा, प्रजातीय सीमा एवं ज्योमितीय सीमा । आनुवांशिक वर्गीकरण के आधार पर सीमा के प्रकार हैं– पूर्ववती, परवर्ती, अध्यारोपित एवं अवशेष सीमा । इसके पश्चात सीमाओं के कार्यो का विवेचन है । सीमा सुरक्षात्मक, अवरोधक, कानून एवं व्यवस्था सम्बन्धी कार्य सम्पन्न करती है । इकाई के अन्त में सीमा एवं विश्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

7.8 शब्दावली (Glossary)

सीमान्त (Frontiers)	:	सीमा निर्धारण से पूर्व का राज्य का बाहरी क्षेत्र
सीमा (Boundary)	:	वह रेखा जहाँ राज्य की सार्वभौमिकता होती है तथा उसका कानून चलता है ।
Centrifugal force	:	बाह्य शक्ति
Inner oriented	:	अन्तरोन्मुखी
Allocation	:	निश्चय
Delimitation	:	निर्धारण '
Demarcation	:	अंकन
Physiographic Boundaries	:	भूआकारिक सीमायें
Anthropo Boundaries	:	प्रजातीय सीमायें
Geometric Boundaries	:	ज्योमितीय सीमायें

Antecedent Boundaries	:	पूर्ववर्ती सीमा
Subsequent Boundaries	:	परवर्ती सीमा
Super - imposed Boundaries	:	अध्यारोपित सीमा
Relict Boundaries	:	अवशेष सीमा

7.9 सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

1	Blij,H.J.de	:	systematic Political Geography, John Wiley, 1973
2	2. Dikshit, R.D.	:	Political Geography , Tata McGraw Hill, N.Delhi,1982
3	Moodie,A.E.	:	Geography Behind Political, Hutchinson Univ.Library London,1963
4	सक्सेना, एच एम	:	राजनीतिक भूगोल. रस्तोगी पब्लिक़ेशन्स, मेरठ, 2004
5	भट्टाचार्य एवं	:	राजनीतिक भूगोल. राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2005

7.10 बोध प्रश्नों के उतर

बोध प्रश्न – 1

1 रेटजल

2 दो भागों में – प्राकृतिक एवं कृत्रिम सीमा

3 ए.ई. मूडी ने

4 सीमान्त को

5 सीमान्त क्षेत्र समाप्त होकर उनका स्थान सीमाओं ने ले लिया है ।

6 हाँ, क्योंकि वे मानव द्वारा निर्मित होती है

7 जे. ऐन्सल

8 सीमान्त क्षेत्र होता है सीमा रेखा ।

9 सीमान्त प्राकृतिक होते हैं सीमा 'कृत्रिम ।

10 सीमान्त बाह्य प्रर्वत होते जब कि सीमा अन्तरोन्मुखी ।

बोध प्रश्न – 2

1 सीमा विकास की तीन अवस्थायें– निर्णय, निर्धारण एवं अंकन हैं ।

2 अंकन

3 पर्वतीय सीमा, नदी सीमा, झील सीमा

4 संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा के मध्य सीमा का एक भाग झीलों से गुजरता है।

5 प्रजातीय सीमा

6 आनुवांशिक वर्गीकरण में

7 अफ्रीका विशेषकर उतरी अफ्रीका मेंद्ध

8 जब सीमा पूर्णतया बन्द हो, राज्य के बाहर से अन्द और अन्दर से बाहर किसी प्रकार का संचार सम्बन्ध तक न हो ।

9 अधिकांश सीमा अवरोधक होती है किन्तु अनेक देशों में यह लचीली भी होती हैं ।

7.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 सीमान्त और सीमाओं की प्रकृति स्पष्ट करते हुए इनके अन्तर का विवेचन कीजिये।

2 स्पष्ट कीजिये कि सीमान्त क्षेत्रीय एवं सीमा रेखात्मक होती है ।

3 सीमाओं के विकास का वर्णन कीजिये ।

4 सीमाओं का वर्गीकरण कीजिये तथा रचना सम्बन्धी वर्गीकरण में वर्णित सीमाओं के प्रकार का विवरण दीजिये ।

5 सीमाओं के कार्यो का विस्तार से वर्णन कीजिये ।

6 सीमाओं के कार्यो का वर्णन करते हुए उनकी विश्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धें में भूमिका स्पष्ट कीजिये ।